

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 17, सिस्टमैटिक्स, क्राइस्ट प्रूफ की मानवता

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन का क्राइस्टोलॉजी पर शिक्षण है। यह सत्र 17 है, सिस्टमैटिक्स, क्राइस्ट प्रूफ की मानवता।

आइए प्रार्थना करें। दयालु पिता, हम आपको अपने बेटे को दुनिया का उद्धारकर्ता, यहाँ तक कि हमारा उद्धारकर्ता बनने के लिए भेजने के लिए धन्यवाद देते हैं। हम आपको धन्यवाद देते हैं कि वह ईश्वर है। हम आपको धन्यवाद देते हैं कि वह एक इंसान बन गया, ताकि वह हमें हमारे पापों से बचा सके। हम उससे प्यार करते हैं, उसकी सेवा में अपने जीवन को शामिल करने में मदद करते हैं, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से माँगते हैं। आमीन।

हम मसीह की मानवता और अवतार का अध्ययन कर रहे हैं, जिसे हम फिर से कवर नहीं करने जा रहे हैं, निश्चित रूप से उसकी मानवता को साबित करता है क्योंकि अवतार का मतलब है कि त्रिदेवों के दूसरे व्यक्ति ने खुद को एक वास्तविक, पाप रहित मानव स्वभाव में बदल दिया।

उनकी मानवता के और भी प्रमाण हैं। उनमें मानवीय कमज़ोरियाँ और ज़रूरतें थीं। उन्होंने मानवीय भावनाएँ दिखाईं।

उसके पास मानवीय अनुभव थे। उसका परमेश्वर, उसके पिता के साथ मानवीय रिश्ता था। उसका उसके साथ दिव्य रिश्ता भी था।

इब्रानियों में कहा गया है कि उसे सिद्ध बनाया गया था। इसका क्या मतलब है? वह पाप रहित था, और मैं तीन स्थानों को गिनता हूँ, खासकर जहाँ उसकी मानवता इतनी स्पष्ट थी कि इसने चर्च की शुरुआत से ही ईसाइयों को परेशान कर दिया। फिर, हम अधीनतावाद के मामले पर चर्चा करना चाहते हैं।

यीशु ने जब कहा, पिता मुझसे बड़ा है, तो उसका क्या मतलब था? और उसका क्या मतलब नहीं था? और फिर ईसाइयों के बीच यह बहस का मुद्दा है कि क्या यीशु के लिए धरती पर रहने के दौरान पाप करना संभव था। हर कोई इस बात पर सहमत है कि उसने पाप नहीं किया। हर कोई इस बात पर सहमत है कि अपने उत्कर्ष की स्थिति में, वह पाप नहीं कर सकता।

लेकिन क्या उसके लिए पाप करना संभव था? क्या वह पापी था? या यह असंभव था क्योंकि वह दिव्य था? यह दोषरहित है। मसीह की मानवता, अवतार को देखने और यह दिखाने के बाद कि यह हमारे प्रभु की मानवता को रेखांकित करता है, यह अवतार का मुख्य बिंदु था। फिर हम उनकी मानवता के इन अन्य प्रदर्शनों के बारे में बात करते हैं।

नंबर दो, नंबर एक अवतार, नंबर दो, उसमें मानवीय कमज़ोरियाँ और ज़रूरतें थीं। वह थका हुआ था। यूहन्ना 4, हम सीखते हैं कि हालाँकि यीशु सामरिया से बचने के लिए यहूदियों के सामान्य मार्ग का अनुसरण कर सकता था, लेकिन उसे सामरिया से होकर जाना पड़ा।

उसने जानबूझकर ऐसा किया ताकि सामरी स्त्री से सामना हो सके। याकूब का कुआँ वहाँ था, यूहन्ना 4 :6। इसलिए यीशु, अपनी यात्रा से थके हुए, कुएँ के पास बैठे थे। यह लगभग छठे घंटे का समय था।

जैसा कि कैल्विन ने अपनी पुस्तक हार्मोनी ऑफ द सिनॉट्रिक गॉस्पेल में लिखा है, यीशु नाटक नहीं कर रहे थे। ईश्वर-मनुष्य के रूप में वे वास्तव में थके हुए थे। स्वर्ग में ईश्वर कभी थक नहीं सकता।

यह सच है, लेकिन धरती पर परमेश्वर थक सकता है, और वह थक गया। बेशक, यह मसीह के व्यक्तित्व के बारे में कहा गया है। यीशु की कोई और मानवता नहीं है सिवाय उसके ईश्वरत्व के साथ एकता के।

लेकिन यह मसीह के व्यक्तित्व के बारे में उनके मानवीय स्वभाव के लिए विशेष प्रासंगिकता के साथ कहा गया है। वह व्यक्ति थका हुआ था, जो मसीह के संपूर्ण व्यक्तित्व का कथन है, विशेष रूप से उनकी मानवता के लिए प्रासंगिक है। वह प्यासा था, और इसलिए क्रूस पर यूहन्ना 19 से, यूहन्ना 19:28 में, हम पढ़ते हैं, इसके बाद, यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ पूरा हो गया है, पवित्रशास्त्र को पूरा करने के लिए कहा, मुझे प्यास लगी है।

और जबकि उसने वह पेय लेने से मना कर दिया था जो एक शामक औषधि होती, वह प्रायश्चित के पूरे दर्द का अनुभव करना चाहता था, अगर आप चाहें तो। वह अपने पूरे प्रायश्चित जुनून या पीड़ा का अनुभव करना चाहता था। अब वह खट्टी शराब पीता है ताकि वह चिल्ला सके, यह पूरा हो गया है।

मुझे प्यास लगी है, उसने कहा। हमारे प्रभु प्यासे थे। मत्ती 4 हमें बताता है कि उन्हें परीक्षा में डाला गया था, और जब हमने इसे पहली बार पढ़ा तो हममें से अधिकांश लोग आश्चर्यचकित हो गए।

फिर यीशु को आत्मा द्वारा जंगल में ले जाया गया ताकि शैतान द्वारा उसकी परीक्षा ली जा सके। यह परमेश्वर की इच्छा थी। यह पिता की इच्छा थी।

आत्मा ने यीशु का नेतृत्व किया। पवित्र आत्मा का अध्ययन इस बात पर जोर देकर शुरू होता है कि वह एक व्यक्ति है और कोई मात्र शक्ति नहीं है, कि वह एक दिव्य व्यक्ति है और कोई मानव व्यक्ति नहीं है। आत्मा कभी मनुष्य नहीं बनी।

फिर, जब हम आत्मा के कार्यों के बारे में बात करते हैं, तो हम सीखते हैं कि उनमें सृष्टि और विधान शामिल हैं। छुटकारे में उसकी भूमिका है। वह क्रूस पर मरकर फिर से नहीं जी उठता, बल्कि वह लोगों पर मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान को लागू करता है।

आत्मा की सेवकाईयों में से एक यीशु के लिए है। वह अपने जीवन के विभिन्न बिंदुओं पर, यहाँ सहित, यीशु के लिए सेवकाई करता है। वह यीशु को शैतान द्वारा परीक्षा में डालने के लिए जंगल में धकेल देता है।

और यीशु को प्रलोभन दिया गया। उसका प्रलोभन हमारे प्रलोभन से कैसे अलग है? खैर, नंबर एक, हममें से ज़्यादातर लोग शैतान के लिए कभी भी इतनी चुनौती नहीं बन पाएंगे कि हम उसके सामने एक-एक करके प्रलोभन के लायक बन सकें। इसलिए, यीशु का प्रलोभन बड़ा था, लेकिन यीशु का प्रलोभन आदम के प्रलोभन जैसा था।

मैं समझता हूँ कि यद्यपि यीशु में आदम की तरह सच्ची मानवता है, फिर भी वह परमेश्वर भी है, और यही बात मामले को जटिल बनाती है। मैं समझता हूँ, लेकिन दूसरे मनुष्य के रूप में, वह आदम की तरह परीक्षा में पड़ा, जिसमें पाप करने की कोई प्रवृत्ति नहीं थी, कोई पापी स्वभाव नहीं था, जो पतन से पहले भीतर पाप करने के लिए पहुँच रहा था। और इस तरह, यीशु का प्रलोभन आदम की तरह था और हमारा जैसा नहीं है।

जो लोग कहते हैं, ओह, उनका प्रलोभन वास्तविक नहीं था। उनमें यह पापी स्वभाव नहीं था। क्या आदम का प्रलोभन वास्तविक था? बेशक, यह वास्तविक था, और यीशु भी वास्तविक थे। वास्तव में, मैंने एक विद्वान का निबंध पढ़ा, शायद नाम आएगा, मार्गुराइट शूस्टर, एक पुस्तक में, क्राइस्टोलॉजी पर परिप्रेक्ष्य, फुलर सेमिनरी में एक धर्मशास्त्री के लिए एक उत्सव, जिसका नाम भी इसी तरह आ सकता है।

वैसे भी, पॉल फुलर में धर्मशास्त्री हैं। उन्होंने कहा कि यीशु के अलावा हम सभी जानते हैं कि एक बार भी प्रलोभन में पड़ने से कितनी राहत मिलती है। लेकिन यीशु हमेशा प्रलोभन की धार पर थे।

वह कभी भी उस मुक्ति, राहत को नहीं जान पाया; वह अब बैठने की सलाह नहीं दे रही है, ठीक है, लेकिन वह काफी स्पष्ट रूप से बोल रही है। वह कभी भी प्रलोभन की भयावहता से मुक्ति को नहीं जान पाया, क्योंकि वह इसके आगे झुक जाती है। एक बार फिर, न तो वह और न ही मैं प्रलोभन के आगे झुकने की सलाह दे रहे हैं, लेकिन हम जानते हैं कि वह किस बारे में बात कर रही है।

और यीशु ने कभी हार नहीं मानी। इसलिए, उनके प्रलोभन हमारे प्रलोभनों से ज़्यादा तीखे थे। यही वह शब्द है जो मैं चाहता हूँ।

वह परीक्षा में पड़ा। इब्रानियों 4 में तो यहाँ तक कहा गया है कि, इब्रानियों 4:15 हमें बताता है, मुझे पद 14 बहुत पसंद है। यह उसका मानवीय नाम है।

मरियम (लूका 1) और यूसुफ (मत्ती 1) दोनों को उसका नाम यीशु रखने को कहा गया, है न? अपने बच्चे का नाम यीशु रखें। इंसान। कभी भी एक साधारण इंसान नहीं।

ईश्वर शिशु। ईश्वर-मनुष्य। तो, उसका नाम रखिए, उसका मानवीय नाम, मसीह।

यीशु की मानवता। यीशु एक मानव प्राणी है, परमेश्वर का पुत्र, इब्रानियों में दूसरे पद से ही उसे ईश्वरीय उपाधि दी गई है। यीशु, परमेश्वर के पुत्र, आइए हम अपने स्वीकारोक्ति को दृढ़ता से थामे रहें।

वह एक व्यक्ति में मनुष्य और ईश्वर दोनों है। क्योंकि, हमारे पास ऐसा कोई महायाजक नहीं है जो हमसे सहानुभूति न रख सके, दूसरे शब्दों में, हमारे पास ऐसा महायाजक है जो हमसे, हमारी कमज़ोरियों से सहानुभूति रख सके, लेकिन वह जो हर तरह से हमारी तरह परीक्षा में आया है, फिर भी पाप रहित है। हर तरह से आपका क्या मतलब है? किसी ने भी यीशु को क्रैक कोकेन नहीं दिया।

इंटरनेट पर पोर्नोग्राफी नहीं थी। ये बातें सच हैं, लेकिन पहली सदी में नशे की लत थी। और पहली सदी में महिलाएं खूबसूरत और आकर्षक थीं।

और यीशु एक पूर्ण-रक्त वाले मानव पुरुष थे। इसलिए, हर तरह के प्रलोभन का सामना करते हुए, उन्होंने लगातार पाप को ना और पिता को हाँ कहा। मैं उनके जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य को कम नहीं करना चाहता।

यह सच था। लेकिन यीशु, एक जिम्मेदार परमेश्वर के रूप में, मनुष्य ने हमेशा पिता की आज्ञा का पालन किया। वह हर तरह से हमारी तरह परीक्षा में पड़ा, फिर भी पाप रहित रहा।

दूसरे आदम ने, पहले आदम से अलग, कभी हार नहीं मानी। यीशु में मानवीय कमज़ोरियाँ और ज़रूरतें थीं। वह थका हुआ था, प्यासा था, परीक्षा में था, और उसने खतरे से परहेज़ किया, जैसा कि हमने पहले यूहन्ना 7 और आयत 1 में देखा था। ईश्वरीय संप्रभुता, मानवीय जिम्मेदारी और तनाव हमारे लिए मसीह के व्यक्तित्व द्वारा हल नहीं किए जाते हैं।

नहीं, यह जटिल है। यह रेखांकित है। क्योंकि जब पिता की इच्छा होती है, तो वह सीधे खतरे में चला जाता है।

और किसी ने उस पर हाथ नहीं डाला क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था। और साथ ही, ओह, इसलिए, वह बेखबर है और कोई परवाह नहीं करता। वह कोई ध्यान नहीं देता।

वह जिम्मेदार नहीं है। ग़लत। यूहन्ना 7:1, इसके बाद, यीशु उत्तर में गलील में घूमता रहा।

वह दक्षिण में यहूदिया में नहीं जाता था क्योंकि यहूदी उसे मार डालना चाहते थे। यीशु, जो स्वयं प्रभुता सम्पन्न था, भी जिम्मेदार था। और उसने हमेशा पिता की आज्ञाओं और इच्छा के अनुसार अपनी इच्छा की स्वतंत्रता का प्रयोग किया।

हमारे प्रभु, त्रिदेव के दूसरे व्यक्ति, अपने अवतार में, बेशक, त्रिदेव त्रिदेव ही रहे। यह रहस्यमय है। लेकिन वे हम में से एक बन गए, उन्होंने खुद को मनुष्य नहीं बनाया, बल्कि परमेश्वर के पुत्र नासरत के यीशु में पूरी तरह से देहधारी हुए, उन्होंने खुद को पापरहित मानव स्वभाव में ढाला, और वे वास्तव में मानव थे।

न केवल उनमें मानवीय कमज़ोरियाँ और ज़रूरतें थीं, जैसा कि हम में होती हैं, बल्कि उन्होंने मानवीय भावनाएँ भी प्रदर्शित कीं। वह क्रोधित थे, मरकुस 3:5। यीशु क्रोधित थे? मुझे लगा कि क्रोधित होना गलत है। जब आपको क्रोधित होना चाहिए, तब क्रोधित होना गलत नहीं है।

यीशु एक सूखे हाथ वाले व्यक्ति को ठीक करते हैं। और, ज़ाहिर है, आराधनालय के नेता कहते हैं, प्रभु की स्तुति करो। यह एक अद्भुत कार्य है। नहीं, वे ऐसा नहीं करते।

वे यीशु पर क्रोधित हैं। उस आदमी को चंगा करने से पहले उसने चारों ओर उनकी ओर देखा। मरकुस 3:5. उसने क्रोध से उनकी ओर देखा, उनके हृदय की कठोरता से दुखी हुआ।

आह, यहाँ अब्राहम का एक बेटा है जो पूर्ण रूप से स्वस्थ होने वाला है। यह शरीर के पुनरुत्थान और नए आकाश और नई पृथ्वी की एक छोटी सी प्रत्याशा है। यीशु ने कहा, अपना हाथ बढ़ाओ।

उसने अपना हाथ बढ़ाया, और उसका हाथ ठीक हो गया। फरीसी बाहर गए और तुरंत हेरोदियों के साथ मिलकर उसके खिलाफ़ एक परिषद की, जिसमें चर्चा की गई कि उसे उसकी सेवकाई के आरंभ में ही कैसे नष्ट किया जाए।

आह, हृदय की ऐसी कठोरता ने यीशु के हृदय को दुखी कर दिया और उसे उचित रूप से, न्यायोचित रूप से क्रोधित कर दिया। यूहन्ना 2, पद 16 में, मंदिर की सफाई में भी यही बात है। इन कबूतरों, इन चीज़ों को दूर कर दो।

अब, क्या बलि के लिए जानवरों का प्रबंध करना गलत था? नहीं। लेकिन क्या उन्हें मंदिर प्रांगण में अन्यजातियों के आँगन में होना चाहिए था? और क्या उन्हें सिक्कों के आदान-प्रदान के लिए अत्यधिक पैसे लेने चाहिए थे, ताकि आपके पास इस्तेमाल के लिए विशेष सिक्के हों? नहीं। इन चीज़ों को हटा दें।

मेरे पिता के घर को व्यापार का घर मत बनाओ। वह नाराज़ है, और उसका नाराज़ होना जायज़ भी है। वह ईश्वर-पुरुष है।

वह दुःखी है। मत्ती 26 हृदय विदारक है। मत्ती 26।

ओह, मेरे। मत्ती 26:36। तब यीशु उनके साथ गतसमनी नामक स्थान पर गया, और उसने अपने चेलों से कहा, " यहाँ बैठे रहो, मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करता हूँ।" और पतरस और जब्दी के दोनों बेटों को साथ लेकर वह उदास और व्याकुल होने लगा। फिर उसने उनसे कहा, " मेरा मन बहुत उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने पर हूँ। तुम यहीं रहो और मेरे साथ जागते रहो।"

और, ज़ाहिर है, वे ऐसा नहीं कर सकते थे। आत्मा तो तैयार है, लेकिन शरीर कमज़ोर है। वे सोते रहे।

इसलिए, वह अपनी सबसे बड़ी ज़रूरत के समय में अकेले थे। हो सकता है कि आप में से कुछ लोग इसे देख और सुन रहे हों, और यह बहुत दुखद रहा हो। शायद आपने ऐसा किया हो।

इतना दुःखी कि आप मरने की इच्छा कर सकें? हो सकता है ऐसा हो। लेकिन हमारे प्रभु ऐसे ही थे। बगीचे में जब वे क्रूस और उसके अर्थ के बारे में सोच रहे थे, तो उन पर भयंकर दुःख हावी हो गया।

शारीरिक भयावहता? ओह, हाँ। लेकिन उससे भी बदतर, परमेश्वर की ओर से आध्यात्मिक न्याय। यूहन्ना 11 में, यीशु मानवीय दुःख प्रदर्शित करता है।

क्या मैं उसे एक साधारण मनुष्य बना रहा हूँ? कभी नहीं! वह परमेश्वर पुत्र है, जो स्वर्ग में पिता और पवित्र आत्मा के साथ रहता है, लेकिन जो वास्तव में हम में से एक बन गया। वह मरियम और मार्था और उनके भाई लाज़र से प्यार करता था। यहूदियों ने अंतिम संस्कार में पेशेवर रोने वालों को काम पर रखा था, और वे यहाँ अपना रोना रो रहे थे।

वे इसमें अच्छे रहे होंगे। यह बात मुझे चौंकाती है, मार्था और मैरी दोनों को। मैं जानता हूँ कि वे एक दूसरे से क्या कह रही थीं।

यदि स्वामी यहाँ होते, तो हमारा भाई नहीं मरता, क्योंकि यह उन दोनों के मुँह से निकली पहली बात थी, स्वतंत्र रूप से यीशु के लिए। जब मरियम वहाँ आई, पद 32, जहाँ यीशु था और उसे देखा, तो वह उसके पैरों पर गिर पड़ी और उससे कहा, प्रभु, यदि आप यहाँ होते, तो मेरा भाई नहीं मरता। जब यीशु ने उसे रोते हुए देखा, और उसके साथ आए यहूदियों को भी रोते हुए देखा, तो वह अपनी आत्मा में बहुत अधिक द्रवित हुआ।

तो, यहाँ एक बार फिर दुःख है। और बहुत परेशान है। उसने पूछा, तुमने उसे कहाँ रखा है? यीशु ने कहा, आओ और देखो।

बाइबल में सबसे छोटी आयत, जॉन 11, 36, 5, में यीशु रोया। फिर से, यह आयत प्रेरित नहीं है, लेकिन यह बहुत बढ़िया है, है न? इसलिए यहूदियों ने कहा, देखो वह उससे कितना प्यार करता था। और, हमेशा की तरह, वे भ्रमित हो गए।

लेकिन उनमें से कुछ ने कहा, क्या वह जिसने अंधे की आँखें खोली, इस आदमी को भी मरने से नहीं बचा सकता था? हाँ, लेकिन आपने अभी तक कुछ भी नहीं देखा है। मृतकों के पुनरुत्थान के अग्रदूत के रूप में, वह लाज़र को पुनर्जीवित करने जा रहा है। यीशु ने तीन लोगों को जीवित किया: नाईन के बेटे की विधवा, यार्डर की बेटी और उसका दोस्त लाज़र।

और उसके और अंतिम दिन के पुनरुत्थान के बीच का अंतर शब्दावली का नहीं है। यह एक ही तरह की भाषा है। लेकिन निश्चित रूप से, उन्हें पुनर्जीवित किया गया था और उन्हें अंतिम समय में नहीं उठाया गया था।

पिछली बार जब हमने जाँच की थी, तो वे तीनों अभी भी मध्य पूर्व में महिमामय शरीर में नहीं थे। किसी भी मामले में, हमारे व्याख्यान में इस संदर्भ का मुद्दा यह है कि यीशु ने अपने मित्र के लिए मानवीय प्रेम प्रदर्शित किया। और यीशु अंतिम संस्कार के दुःख को जानते थे, अगर आप चाहें, या उसके परिणामों को।

संकट, मार्क 3:5. यीशु के पास एक हृदय है। और हम पहले से ही वहाँ रहे हैं। यह उसका हृदय है।

यह उसकी परेशानी और गुस्सा है। वह अंदर से परेशान है जब यहूदी नेता अपने आराधनालय में इस आदमी की संभावना पर नहीं कूदते हैं, जिसे वे सूखे हाथ से जानते हैं, जिसे वे जानते हैं कि वह ठीक हो गया है। यीशु के पास मानवीय अनुभव थे।

वह पैदा हुआ। वह बड़ा हुआ। उसे सूली पर चढ़ाया गया।

वह मर गया। उसका जन्म हुआ। मत्ती 1:18 और उसके बाद के अध्याय हमें बताते हैं कि यीशु मसीह का जन्म इस तरह हुआ।

मैं आयतों को दोबारा नहीं पढ़ंगा, लेकिन यह इसी बारे में बताता है। इसी तरह, लूका 2:1 से 4 भी यही बात कहता है। अब, मैं ईसे सीधे तौर पर समझाता हूँ।

परमेश्वर का पुत्र पैदा हुआ? हाँ। क्या यही उसके परमेश्वर होने की शुरुआत है? बिलकुल नहीं। वह हमेशा से ही स्वर्ग में पिता और आत्मा के साथ परमेश्वर था।

और वह पवित्र त्रित्व के रहस्य के अनुसार स्वर्ग में पिता और आत्मा के साथ रहा। अपने अवतार के बाद भी वह बना रहा। बेशक।

अन्यथा, आपके पास अब त्रित्व नहीं है। ओह, मैं चाहता हूँ कि त्रित्व, पिता और आत्मा स्वर्ग में हों, और पुत्र मरियम के गर्भ में सीमित हो और एक सांसारिक शरीर तक सीमित हो। तब आपके पास त्रित्व नहीं है।

इसीलिए कल मैंने पुष्टि की, यह एक मज़ेदार, एक भयानक टैग है, अतिरिक्त कैल्विनिस्टिक। यह लूथरन गाली है। सुधारक लूथरन की तरह ही गाली दे रहे थे, वे दोनों तरफ़ कीचड़ उछाल रहे थे, इसलिए मेरा मतलब इसके बारे में बुरा नहीं है, लेकिन यह ऐसा ही था।

और मैंने आपको दिखाया कि डेविड विलिस ने कहा, आप इसे एक्स्ट्रा कैथोलिकम या एक्स्ट्रा पैट्रिस्टिकम कह सकते थे। यह एथनासियस की पैट्रिस्टिक शिक्षा थी कि शाश्वत शब्द एक आदमी बन गया, लेकिन, निश्चित रूप से, शाश्वत शब्द बना रहा। यदि आप उसे गुण छोड़ देते हैं, उदाहरण के लिए, सर्वव्यापीता, सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमानता, तो वह ईश्वर नहीं है, और त्रिदेव बस फट गए।

इसलिए, अवतार हमारी कल्पना से कहीं ज़्यादा रहस्यमय है क्योंकि दूसरा व्यक्ति पूरी तरह से अवतार लेता है। चरनी में बच्चा ईश्वर है। ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता इस मनुष्य, यीशु में,

शारीरिक रूप में निवास करती है, कुलुस्सियों 2:9। लेकिन निश्चित रूप से त्रिएकत्व त्रिएकत्व ही रहता है।

इब्रानियों 1 में कहा गया है कि मसीह, पुत्र, अपने वचन के द्वारा सभी चीजों को बनाए रखता है। कुलुस्सियों 1 में कहा गया है कि सभी चीजें उसी से बनी हैं। देहधारी मसीह के बारे में बात करें।

उन्होंने अपने शरीर में प्रोविडेंस का कार्य नहीं किया, बल्कि देह से बाहर शब्द, लोगोस असाकोस के रूप में उन्होंने वह कार्य किया। इसलिए वे लोगोस असाकोस हैं और वे लोगोस असाकोस हैं। वे त्रिदेवों के दूसरे व्यक्ति हैं जो हमेशा उस भूमिका में बने रहते हैं।

वह त्रिदेवों में से दूसरे व्यक्ति हैं, जो नासरत के यीशु में हमेशा के लिए अवतरित हुए। क्या मैं इन बातों को पूरी तरह समझता हूँ? नहीं, मैं त्रिदेवों को पूरी तरह नहीं समझता, अवतार को तो छोड़ ही दीजिए, और यह तथाकथित अतिरिक्त-कैल्विनिस्टिकम व्यवसाय दोनों के बीच एक संबंध है, इसलिए यह एक दोहरा रहस्य है। कैसे त्रिदेव पूरी तरह से बरकरार रहते हैं, एक तिहाई से कम नहीं होते, और कैसे मनुष्य यीशु कभी भी एक साधारण मनुष्य नहीं थे, बल्कि स्वयं ईश्वर थे।

यीशु का जन्म हुआ। मैरी थियोटोकोस है। इससे उसे कोई विशेष सम्मान नहीं मिलता या वह प्रार्थना का विषय नहीं बनती। इसका अर्थ है कि वह ईश्वर को धारण करने वाली है। उसके गर्भ में पल रहा बच्चा ईश्वर है। यह उसके लिए श्रेय की बात नहीं है।

यह पूरी तरह से ईश्वर की कृपा है कि पवित्र आत्मा ने उसे, एक कुंवारी को, गर्भवती होने का मौका दिया। और जो उसने गर्भ में धारण किया वह हमारे प्रभु की मानवता थी। यीशु का जन्म हुआ।

वह एक इंसान है, कभी सिर्फ इंसान नहीं। वह बड़ा हुआ। ओह, मुझे लूका 2:52 बहुत पसंद है। लड़के, इसने पिछले कुछ सालों में मेरे छात्रों के दिमाग को किसी और आयत की तरह उड़ा दिया है।

मैं उनके चेहरों पर यह देख सकता हूँ। वे बेचैन हैं। वे घबराये हुए हैं।

लेकिन मुझे ये मिल गए क्योंकि ये बाइबल है। मंदिर में बालक यीशु ने अपने माता-पिता को चौंका दिया, क्या आपको नहीं पता था कि यह मेरे पिता के व्यवसाय के बारे में होगा? रब्बियों को पढ़ाने के लिए पीछे रहना। वह उनके साथ नीचे गया, ल्यूक 2.51, और नासरत आया और उनके अधीन था।

और उसकी माँ ने इन सभी बातों को अपने दिल में संजोकर रखा। मैं कुछ संवेदनशील लोगों को जानता हूँ। मैं कुछ पादरी, एल्डर और नियमित मसीहियों को जानता हूँ जिनके दिल सच्चे हैं।

पुरुष भी, जिनके दिल में लोगों के लिए सच्चा प्यार होता है। लेकिन महिलाओं की तरह नहीं। और उनकी माँ मरियम ने इन सभी बातों को अपने दिल में संजोकर रखा।

यह एक महिला और एक माँ के रूप में मरियम के उपहारों की एक सुंदर अभिव्यक्ति है, जो समझती है, लेकिन पूरी तरह से नहीं समझती, इस बच्चे का आश्चर्य जिसे वह दुनिया में लेकर आई थी। लूका 2:52, और यीशु बढ़ता गया। वह बुद्धि और कद में बढ़ता गया और परमेश्वर और मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ता गया।

यीशु कैसे बढ़ा हुआ? वह बुद्धि में बढ़ा हुआ। वह बौद्धिक रूप से बढ़ा हुआ। क्या परमेश्वर के पुत्र के बारे में आपकी धारणा ऐसी ही थी? क्या वह 12 वर्ष की उम्र में बौद्धिक रूप से 3 वर्ष की उम्र से अधिक प्रखर था? बाइबल कहती है कि वह था।

ओह, इसमें वर्षों का उल्लेख नहीं है, लेकिन यही बात है। उसने पाप से अलग, सामान्य मानवीय विकास का अनुभव किया। क्या उसने बचकानी हरकतें कीं? ज़रूर।

क्या बचकाना होना पाप है? नहीं। बेशक, उसने किया। क्या उसने वही किया जो अपोकलिफ़ल गॉस्पेल में कहा गया है? मिट्टी से कबूतर बनाए, उनमें फूंक मारी और वे उड़ गए? या अपने साथियों को मार डाला? नहीं, बिल्कुल नहीं।

यही उदाहरण है। इस तरह की चीजें इस बात का उदाहरण हैं कि पवित्र ईसाई भी अपने अंतराल को भरने के लिए क्या करते हैं। परमेश्वर हमें बाइबल में वह देता है जो वह चाहता है कि हमारे पास हो, और उसने हमें यह नहीं बताया कि यीशु ने शिशु के रूप में क्या किया या किशोर के रूप में यीशु ने क्या किया।

उसने हमें नहीं बताया। इसलिए, ज़्यादातर मामलों में, बेशक, कुछ विधर्मियों ने भी झूठे सुसमाचार लिखे हैं, लेकिन ज़्यादातर मामलों में, वे ईसाइयों द्वारा लिखे गए हैं, और वे बेतुके हैं। इससे पता चलता है कि वे अपने दम पर क्या-क्या लिख सकते हैं।

उनमें से कुछ ने तो यह भी सोचा कि वे प्रेरित थे, लेकिन नहीं, वे प्रेरित नहीं थे। किसी भी मामले में, यीशु ने 30 साल की उम्र में अपनी सार्वजनिक सेवकाई शुरू करने पर बुद्धि में वृद्धि की, कई वर्षों तक भक्ति की और पिता से प्रार्थना की। ईश्वर-मनुष्य के रूप में, वह बौद्धिक रूप से उस तरह से तैयार था, जैसा कि वह 12 साल की उम्र में नहीं था, हालाँकि वह 12 साल की उम्र में एक होशियार बच्चा था, यह निश्चित है।

उनका कोई प्रभामंडल नहीं था। ओह, वे भगवान थे, लेकिन उनका कोई प्रभामंडल नहीं था। मैं समझता हूँ।

मध्यकालीन कला यह नहीं कह रही थी कि उसके पास सचमुच एक प्रभामंडल था। वे उसका सम्मान कर रहे थे। यह एक प्रतीक था कि वह मानव शरीर में भगवान था।

वह है! और बाइबल में मसीह के अवतार के बारे में जो कुछ भी कहा गया है वह पूरे व्यक्ति से संबंधित है, जब तक कि वह स्वर्ग में पुत्र के बारे में बात न करे। जब वह पृथ्वी पर पुत्र के बारे में बात करता है, और यह कहता है कि उसने पापों को क्षमा किया, या लाजर को मृतकों में से जीवित किया, या कहा, मैं हूँ, जब वे उसे गिरफ्तार करने आए, यूहन्ना 18, और उसे गिरफ्तार

करने आए लोगों को गिरा दिया। यह व्यक्ति, अवतार पुत्र के बारे में, उसकी दिव्यता के विशेष संदर्भ में कहा गया है।

अन्य कहावतें, मुझे प्यास लगी है। वह थका हुआ था। वह भूखा था।

वह सो गया। वह कमज़ोर था। और शमौन ने उसके लिए उसका कूस उठाया।

तुम भी कमज़ोर हो जाओगे। लोग सूली पर चढ़ाए जाने की तैयारी में कोड़े खाकर खून बहाकर मर जाते थे। हे भगवान! ये कथन किसी आदमी, यीशु ने नहीं कहे हैं।

अवतार के अलावा कोई मनुष्य, यीशु नहीं है। ये बातें मसीह के व्यक्तित्व के बारे में कही गई हैं, जो एक ही व्यक्ति में ईश्वर और मनुष्य दोनों हैं, बेशक, उनकी मानवता के विशेष संदर्भ में। और, बेशक, उनकी मृत्यु भी ऐसी ही है।

अहा! क्या मैंने कहा कि परमेश्वर मर नहीं सकता? बेशक, स्वर्ग में परमेश्वर मर नहीं सकता। लेकिन इब्रानियों 2:14, चूँकि बच्चे मांस और लहू में भागीदार हैं, वास्तव में, शाब्दिक रूप से, लहू और मांस, लेकिन आप उस तरह से अनुवाद नहीं कर सकते क्योंकि हम उस तरह से बात नहीं करते। उसने खुद भी उन्हीं चीज़ों में हिस्सा लिया, ताकि मृत्यु के ज़रिए वह शैतान को नष्ट कर सके और अपने लोगों को छुड़ा सके।

स्वर्ग में परमेश्वर मरने के लिए मनुष्य बन गया। और हाँ, परमेश्वर मर नहीं सकता, लेकिन रहस्यमय तरीके से, जो मरा वह परमेश्वर था। मैंने पहले भी कहा है।

मैं शायद इसे फिर से कहूँगा। कूस रहस्यमय है क्योंकि अवतार का रहस्य कूस पर ही आधारित है। आप मुझे बताइए कि कैसे यीशु एक ही व्यक्ति में ईश्वर और मनुष्य हैं, और मैं आपको बताऊँगा कि कैसे ईश्वर, जो मर नहीं सकता, हमारे प्रभु की मानवता के साथ मिलकर मर गया।

यह ठीक नहीं कहा गया। वह व्यक्ति मर गया। यही बात है।

हम मनुष्य या ईश्वर के बारे में बात नहीं करते। यह नेस्टोरियन है। वह एक व्यक्ति है, जो नासरत के यीशु में अवतरित हुआ।

वह शारीरिक रूप से बड़ा हो गया। अगर मैरी ने बढ़ई की दुकान के दरवाज़े पर, जोसेफ की बढ़ई की दुकान पर जो किया, मेरी पत्नी ने हर जन्मदिन पर रसोई के दरवाज़े पर क्या किया, ओह बेटा, कितना छोटा बच्चा। अच्छा भगवान, छोटा बच्चा अब 32 साल का हो गया है।

मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। वह बहुत उत्साहित था, क्योंकि अपने सातवें जन्मदिन पर वह अपने अन्य तीन भाइयों से लंबा था। अगर मैरी ने ऐसा किया, तो बढ़ई की दुकान के दरवाजे पर निशान बढ़ गए।

पीटरसन, आप क्या कह रहे हैं? कि परमेश्वर का पुत्र बड़ा हुआ? मैं बिल्कुल यही कह रहा हूँ क्योंकि परमेश्वर का पुत्र मनुष्य का पुत्र बन गया, और परमेश्वर-मनुष्य के रूप में, वह शारीरिक

रूप से बड़ा हुआ। वह न केवल बुद्धि में बल्कि कद में भी बड़ा हुआ। मेरे छात्रों के लिए असली बाधा तब होती है जब यह कहा जाता है कि वह परमेश्वर के अनुग्रह में बड़ा हुआ।

ओह, समय समाप्त हो गया। ईश्वर का पुत्र आध्यात्मिक रूप से विकसित हुआ। हाँ। ईश्वर-मनुष्य के रूप में, 12 वर्ष की आयु में, उसने मंदिर में डॉक्टरों और पादरी को आश्चर्यचकित कर दिया, लेकिन निश्चित रूप से उसकी प्रार्थनाएँ 12 वर्ष की आयु की तुलना में 21 वर्ष की आयु में अधिक प्रबल थीं, और निश्चित रूप से वह जानता था कि उसके पास अधिक अनुभव था।

एक दिन का नया ईसाई भी यीशु से उतना ही प्यार कर सकता है जितना कोई और, लेकिन वह परिपक्व नहीं हो सकता। यह असंभव है। परिपक्वता समय के साथ उद्धार करने वाले विश्वास, पवित्र आत्मा और अनुग्रह में वृद्धि का कार्य है, और यीशु समय के साथ अनुग्रह और परमेश्वर के ज्ञान में बढ़े।

इसलिए, जब वह 30 वर्ष की आयु में अपना सार्वजनिक मंत्रालय शुरू करने के लिए तैयार था, जो कि निर्धारित आयु थी, तो वह आध्यात्मिक रूप से विकसित हो चुका था और तैयार था। क्या वह परमेश्वर के रूप में तैयार नहीं था? हाँ। और जब पिता की इच्छा थी, तो उसने दिव्य शक्तियों का उपयोग किया, लेकिन जंगल के प्रलोभन में, यह पिता की इच्छा नहीं थी।

हम पढ़ते नहीं हैं, और यीशु ने मुड़कर कहा, शैतान, झटका! नहीं, हम ऐसा नहीं पढ़ते हैं। नहीं, हम पढ़ते हैं, शास्त्र कहता है, तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा मत लो, इस तरह, और इसी तरह। व्यवस्थाविवरण को तीन बार उद्धृत करना कुछ ऐसा है जो हम कर सकते हैं।

क्या यीशु हमारा आदर्श है? हाँ और नहीं। यह पूछना कि यीशु क्या करेंगे, बुरा नहीं है। अगर आपको लगता है कि यह उद्धार का मार्ग है तो यह बुरा है।

यह असंभव है। लेकिन जहाँ तक ईसाई जीवन के एक पहलू की बात है, तो निश्चित रूप से, हमें यीशु के जैसे चलना चाहिए, 1 यूहन्ना 2। वह हमारा उदाहरण है। मैं नए नियम में 10 ऐसे स्थान गिनता हूँ जहाँ वह अकेले अपनी मृत्यु में हमारे लिए एक उदाहरण है, लेकिन यह एक अन्य समय के लिए एक विषय है।

यीशु ने 12 साल की उम्र में अपने माता-पिता के साथ मिलकर भविष्य की ओर देखते हुए अपने बेटे को बड़ा किया। डॉ. ल्यूक कहते हैं कि हम पढ़ते हैं कि आत्मा के द्वारा। वह बुद्धि में बड़ा हुआ।

वह कद में बड़ा हुआ। वह परमेश्वर के अनुग्रह में बड़ा हुआ, और वह मनुष्य के अनुग्रह में बड़ा हुआ। यदि मरियम ने यीशु को वह करने दिया जो मेरी पत्नी ने हमारे छोटे लड़कों को करने दिया, तो छोटे लड़के अब बड़े हो चुके हैं, बच्चे पैदा कर रहे हैं, जब वे छोटे लड़के थे, यदि उसने उन्हें ऐसा करने दिया, यदि मरियम ने यीशु को अपने हाथों से खाने दिया, तो उसके शरीर पर हर जगह चीज़ें लग गईं।

बात यह है: उसने अपने सामाजिक कौशल में वृद्धि की, ठीक है? यह वह बात है जिसे मैं आपको दिखाना चाहता हूँ। प्रभु यीशु मसीह का ईश्वरत्व हमारे उद्धार के लिए अत्यंत आवश्यक है। पंथों की सबसे बड़ी गलती, भगवान उन गरीब लोगों का भला करे जो उन व्यवस्थाओं में फंसे हुए हैं, यह है कि वे यह नहीं मानते कि यीशु ईश्वर हैं।

इसलिए, वे किसी साधारण मनुष्य या स्वर्गदूत पर भरोसा नहीं कर सकते कि वह उन्हें अनंत जीवन देगा और उनके पापों को दूर करेगा क्योंकि स्वर्गदूत और साधारण मनुष्य ऐसा नहीं करते। लेकिन जैसे मसीह का ईश्वरत्व आवश्यक है, वैसे ही उसकी मानवता भी आवश्यक है। स्वर्ग में परमेश्वर हमारे पापों के लिए नहीं मर सकता।

स्वर्ग में परमेश्वर धरती पर परमेश्वर इसलिए बना ताकि वह हमारी जगह मर सके। जो क्रूस पर मरा वह हमारी ही जाति का था, यानी मानव जाति का। वह दूसरा आदम था, जो हर तरह से पूरी तरह से मनुष्य था।

पाप मानवता का अभिन्न अंग नहीं है। यह एक विक्षिप्तता है। और केवल आदम और हव्वा और यीशु ही उस तरह से सही ठहराए गए, और केवल यीशु ही उस तरह से सही रहे।

भगवान का शुक्र है। हमारे प्रभु की सच्ची मानवता को प्रदर्शित करने वाला एक शक्तिशाली श्लोक। उनकी वास्तविक मानवता बौद्धिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से उनके विकास से प्रदर्शित होती है।

यीशु जैसे-जैसे बड़े होते गए, उन्होंने सामाजिक कौशल हासिल किए। उनका क्रूस पर चढ़ना और उनकी मृत्यु उन मानवीय अनुभवों को दर्शाती है जिनसे वे गुज़रे। क्या ईश्वर मर गया? खैर, जो मरा वह ईश्वर था।

यदि मृत्यु शरीर और आत्मा का पृथक्करण है, तो परमेश्वर का पुत्र मर जाएगा। यह समाप्त हो गया है। पिता, मैं अपनी आत्मा को आपके हाथों में सौंपता हूँ।

और उसकी आत्मा और देह अलग हो गए। हे परमेश्वर, उसने हम से कैसा प्रेम किया। यूहन्ना 19:18.

वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ दो और लोगों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को दोनों ओर और यीशु को उनके बीच में। पद 30. जब यीशु ने सिरका लिया, तो उसने कहा, " पूरा हुआ।"

और उसने अपना सिर झुकाया और अपनी आत्मा त्याग दी। 33. जब सैनिक... ओह, यह तैयारी का दिन है, और यहूदी सब्त को तोड़ने और सब्त को न तोड़ने के बारे में बहुत चिंतित हैं।

ओह, चलो हम अपने विश्राम संबंधी 'आई' पर डॉट लगाते हैं और अपने विश्राम संबंधी 'टी' पर क्रॉस लगाते हैं। ओह।

ओह, भगवान। लेकिन वे सूर्यास्त के बाद क्रूस पर लटके लोगों पर क्रूस नहीं लगा सकते थे, इसलिए उन्होंने अन्य दो लोगों की टाँगें तोड़ दीं। वे यीशु के पास आए।

जब वे यीशु के पास आए, यूहन्ना 19:33, और देखा कि वह पहले ही मर चुका है, तो उन्होंने उसके पैर नहीं तोड़े। और, बेशक, उन्होंने अनजाने में ही शास्त्र की बात पूरी कर दी। कोई रोमन सेनापति नहीं है।

ओह, मुझे यहाँ देखना है। मैं भजन पूरा करना चाहता हूँ। मुझे ऐसा नहीं लगता।

पूरी तरह से अज्ञानी। फिर भी, परमेश्वर के पुत्र की वास्तविक मानवता उसके मानवीय अनुभवों से प्रदर्शित होती है। उसका जन्म हुआ।

वह बड़ा हुआ। वह मर गया। परमेश्वर के पुत्र की सच्ची मानवता उसके पिता के साथ उसके मानवीय रिश्ते से भी प्रदर्शित होती है।

यह स्वर्ग में शुरू नहीं हुआ। यह धरती पर शुरू हुआ। वह परमेश्वर के अधीन था।

उसने परमेश्वर का आदर किया। उसने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया। व्यवस्थित शक्ति ही उसकी कमजोरी है।

इसकी ताकत यह है कि यह परिभाषित करता है, भेद करता है, और ध्यान केंद्रित करता है, और आप इस तरह के विस्तृत काम से मसीह की मानवता को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, जितना आप सामान्य रूप से समझ सकते हैं, उसके देवता और अवतार और उसके दूसरे आगमन और अन्य के साथ इसे समझने की कोशिश कर रहे हैं। नहीं, नहीं, यह काम नहीं करता है। लेकिन हमें सावधान रहना होगा क्योंकि, जब हम इन चीजों को अलग करते हैं, तो हम एकतरफा या अदूरदर्शी हो सकते हैं।

तो, क्या पिता के साथ उनका मानवीय रिश्ता था? हाँ। क्या पिता के साथ उनका दिव्य रिश्ता तब भी जारी रहा जब वे धरती पर थे? हाँ। क्या यह रहस्यमय नहीं है? ओह, हाँ।

मैंने कभी भी रहस्य को स्पष्ट नहीं किया। मैंने कभी भी रहस्य को स्पष्ट करने का दावा नहीं किया... नहीं, मैं रहस्य का सम्मान करता हूँ। और हम जो बातें कहते हैं, वे वास्तव में रहस्य को रेखांकित करती हैं।

वह परमेश्वर के अधीन था। यूहन्ना 14:28. यहाँ, यीशु कहते हैं, तुमने मुझे यह कहते सुना है, कि मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास आऊँगा।

हमेशा की तरह, बेचारे शिष्य उसे समझ नहीं पाते। आप और मैं इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकते थे। अगर आप मुझसे प्यार करते, तो आप खुश होते क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ।

क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है। यह कथन उलटा नहीं जा सकता। यीशु ने यह नहीं कहा कि मैं पिता से बड़ा हूँ क्योंकि वह नहीं है। अब, क्या यह स्वर्ग में त्रिदेव का शाश्वत कथन है? नहीं।

नहीं, यह पृथ्वी पर त्रिदेव के दूसरे व्यक्ति का एक लौकिक कथन है। ईश्वर-मनुष्य के रूप में, वह कह सकता था, पिता मुझसे महान है। और मैं, पृथ्वी पर ईश्वर-मनुष्य के रूप में, पिता के पास वापस जा रहा हूँ, और आपको इस बात से खुश होना चाहिए। यीशु ईश्वर के अधीन था।

यूहन्ना 5:26. चौथे सुसमाचार में उनकी ईश्वरीयता सर्वत्र दिखाई देती है। उनकी मानवता भी सर्वत्र दिखाई देती है।

वे दोनों ही ज़रूरी हैं। चाल्सेडन सही है। वह दो स्वभावों वाला एक व्यक्ति है।

अवतार के समय से ही। मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, यूहन्ना 5:25। एक घड़ी आ रही है और अब यहाँ है।

जब मरे हुए लोग परमेश्वर के पुत्र की आवाज़ सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीवित हो जाएँगे। यह पुनरुत्थान जैसा लगता है, शारीरिक, लेकिन अभी ऐसा नहीं है। यह श्लोक 28 और 29 में है।

यह आध्यात्मिक पुनरुत्थान या पुनर्जन्म है। जैसे पिता के पास स्वयं में जीवन है, वैसे ही उसने पुत्र को भी स्वयं में जीवन रखने की अनुमति दी है। क्या लोग इसे पिता द्वारा पुत्र को अनंत काल में प्राप्त करने का शाश्वत कथन मान सकते हैं? मुझे ऐसा नहीं लगता।

मुझे लगता है कि यह पिता द्वारा अवतार प्रदान करने का एक लौकिक कथन है। मैं अभी भी शब्दों को ठीक से नहीं समझ पाया हूँ, माफ़ करें। पिता अवतार के लिए इच्छुक थे और पुत्र को मनुष्य बनने के लिए इच्छुक थे।

जैसे पिता के पास स्वयं में जीवन है, वैसे ही उसने देहधारी पुत्र को भी स्वयं में जीवन रखने की अनुमति दी है। यह पिता की इच्छा थी कि देहधारण हुआ। यह कथन उलटा नहीं जा सकता।

बेटे की यह इच्छा नहीं है कि पिता भी वही बन जाए। नहीं, नहीं, अपने आप में जीवन हो। नहीं, यह काम नहीं करता।

यूहन्ना 17, यह अद्भुत प्रार्थना जिसमें यीशु ने खुद को पिता के पास वापस आते हुए देखा, अपना काम पूरा कर लिया। यूहन्ना 17:2. जब यीशु ने इन शब्दों की पहली आयत कही, तो उसने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाई और कहा, पिता, वह समय आ गया है। अपने बेटे की महिमा करें ताकि आपका बेटा आपकी महिमा करे क्योंकि आपने उसे सभी प्राणियों पर अधिकार दिया है कि वह उन सभी को अनन्त जीवन दे जिन्हें आपने उसे दिया है।

पिता द्वारा लोगों को पुत्र को सौंपना यूहन्ना के चुनाव के तीन चित्रों में से एक है। यहाँ हमें इसे रोकने की आवश्यकता नहीं है, सिवाय इसके कि मैं कहूँ कि यह इस अध्याय में चार बार आता है, और यह पुत्र की सेवकाई के लिए निर्णायक है, और मैं इसे यहीं छोड़ता हूँ। अब हम जो देखना

चाहते हैं वह है अपने पुत्र की महिमा करना, पिता ; पुत्र आपकी महिमा कर सकता है क्योंकि आपने उसे सभी प्राणियों पर अधिकार दिया है ताकि वह अनन्त जीवन दे सके।

इसका अर्थ है चुने हुए लोग। पिता ने पुत्र को सभी प्राणियों पर अधिकार दिया। यह कथन उलटा नहीं जा सकता।

पिता को सभी प्राणियों पर अधिकार नहीं दिया। इसका अर्थ यह है कि पुत्र देहधारी हुआ, और परमेश्वर ने उसे आशीर्वाद दिया, उसे बल दिया, और उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया। मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की, पद चार, उस कार्य को पूरा करके जो तूने मुझे करने को दिया था।

इसे उलटा नहीं किया जा सकता। पिता यीशु से यह नहीं कह सकते कि मैंने धरती पर तुम्हें महिमा दी है, काम पूरा किया है। नहीं, मैं श्रद्धापूर्वक बोलता हूँ।

मैं बस इस बात को स्पष्ट कर रहा हूँ। यह श्लोक अधीनता को दर्शाता है। बाद में, मैं इस बात पर जोर दूंगा कि नए नियम में पुत्र के पिता के प्रति अवतार में अधीनता है, और हमें इसे अस्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है।

हमें इस पर खुशी मनानी चाहिए। यह उनकी मानवता को दर्शाता है, जो हमारे उद्धार के लिए उनके देवता होने जितना ही महत्वपूर्ण है। लेकिन यह एक आर्थिक या कार्यात्मक अधीनता है, न कि एक अनिवार्य अधीनता।

वह ईश्वर पुत्र ही रहता है। इसके अलावा, पुत्र पिता का सम्मान ऐसे तरीके से करता है जो पारस्परिक नहीं है। एक अर्थ में आप कह सकते हैं कि पिता पुत्र का सम्मान करता है, बेशक।

वास्तव में, यीशु चौथे सुसमाचार में इसी भाषा का उपयोग करते हैं। मेरा पिता मेरा आदर करता है, लेकिन तुम नहीं करते। कुछ ऐसा ही, और मैंने अपना स्थान खो दिया है।

लेकिन 718 में, जो अपने अधिकार से बोलता है, वह अपनी महिमा चाहता है। लेकिन जो अपने भेजेनेवाले की महिमा चाहता है, वह सच्चा है, और उसमें कोई झूठ नहीं है। यह नहीं कहा जा सकता कि पिता अपने भेजेनेवाले पुत्र की महिमा चाहता है, क्योंकि पुत्र ने पिता को नहीं भेजा।

पिता ने पुत्र को उद्धारकर्ता होने के लिए संसार में भेजा। और पुत्र पिता की आज्ञा मानकर, उसकी इच्छा पूरी करके पिता का आदर करता है। मुझे श्लोक 17 बहुत पसंद है।

यह बहुत ही उल्लेखनीय है। यदि किसी की इच्छा परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की है, तो वह जान जाएगा कि क्या शिक्षा, मेरी शिक्षा, यीशु द्वारा दी गई शिक्षा परमेश्वर की ओर से है या मैं बोलता हूँ, मैं अपने अधिकार से बोल रहा हूँ। यह दावा करने के लिए एक अद्भुत वादा है।

अगर हमारे पास ऐसे दोस्त हैं जो परमेश्वर के साथ ईमानदार होने और परमेश्वर के वचन को पढ़ने के लिए तैयार हैं, यूहन्ना का सुसमाचार पढ़ते हैं, तो प्रभु उन्हें दिखाएगा कि ये शब्द यीशु के

शब्द हैं या नहीं। यह कितना सुंदर वादा है। यह कितना अद्भुत, आमंत्रित करने वाला उद्धारकर्ता है।

यीशु झोपड़ियों के पर्व के बीच में चले गए ताकि कोई बड़ा धमाका न हो और समय से पहले सूली पर न चढ़ा दिया जाए। विजयी प्रवेश बाद में हुआ, अभी नहीं। यहूदियों ने उसे सुना, और वे आश्चर्यचकित हो गए।

इस आदमी ने किसी रब्बी से अध्ययन नहीं किया। उसने खुद को एक लड़के के रूप में यहूदी शिक्षक के पास प्रशिक्षु नहीं बनाया। दुनिया में क्या है? यह कैसे है कि इस आदमी के पास ज्ञान है जबकि उसने कभी अध्ययन नहीं किया? वास्तव में, श्लोक 16 कहता है, पिता मेरा रब्बी है।

इसलिए, यीशु ने उन्हें उत्तर दिया: मेरी शिक्षा मेरी नहीं, बल्कि मेरे भेजनेवाले की है। यदि किसी की इच्छा परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की है, तो वह जान जाएगा कि यह शिक्षा परमेश्वर की ओर से है या मैं अपने अधिकार से बोल रहा हूँ। हमें उस अद्भुत वादे का दावा करना चाहिए और बचाए न गए लोगों को आमंत्रित करना चाहिए।

अब, मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर मत दो। मैं मज़ाक उड़ाने वालों की बात नहीं कर रहा हूँ। लेकिन मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उत्तर दो।

कुछ मूर्ख, उद्धार न पाए हुए लोग बाइबल को खुले मन से पढ़ने के लिए देने को तैयार हैं ताकि प्रभु उनके जीवन में काम कर सकें। और यीशु ने, यूहन्ना के सुसमाचार के माध्यम से, बहुत से लोगों को दिखाया है कि वह जीवित है और वह आज भी जीवनदाता है, जो उन लोगों को अनंत जीवन देता है जो उस पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करते हैं। जो अपने अधिकार से बोलता है वह अपनी महिमा चाहता है।

इसका मतलब यह है कि मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ। लेकिन जो अपने भेजनेवाले की महिमा चाहता है, वही सच्चा है, और उसमें कोई झूठ नहीं है। यीशु अपने बारे में तीसरे व्यक्ति में बात करते हैं जैसा कि वे अक्सर करते हैं।

और वह कह रहा है, मैं पिता की महिमा चाहता हूँ। मैं पिता का सम्मान आज्ञाकारी पुत्र के रूप में करता हूँ। और एक बार फिर, हालाँकि पिता पुत्र का सम्मान करता है, लेकिन इस तरह से नहीं।

इसमें, यह ईश्वर-मनुष्य द्वारा स्वर्ग में अपने पिता का सम्मान करने का एक तरीका है। इसके अलावा, बार-बार, हम पढ़ते हैं कि यीशु ने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया। यूहन्ना 10:18, वह एक अच्छा चरवाहा है जो अपना जीवन देता है और फिर से लेता है।

बाइबल में अद्वितीय। यूहन्ना 2, इस मंदिर को नष्ट कर दो, और तीन दिन में मैं इसे खड़ा कर दूंगा। यूहन्ना 10, मैं अपना जीवन देता हूँ, मैं इसे फिर से लेता हूँ।

संपूर्ण पवित्रशास्त्र में अद्वितीय रूप से, यीशु ने स्वयं को चौथे सुसमाचार में उठाया। अर्थात्, यूहन्ना ने नए नियम की प्रवृत्ति को और अधिक बढ़ा दिया है, जिसमें पुत्र को परमेश्वर के पुराने

नियम के सामान्य कार्यों का श्रेय दिया जाता है। हम पहले ही देख चुके हैं कि कैसे कुलुस्सियों, फिलिप्पियों, इब्रानियों ने पुत्र को सृष्टि, विधान, मुक्ति, पूर्णता का श्रेय दिया है।

जॉन आगे कहते हैं। अगर मैं जॉन 1:12 और 13 को सही से समझूँ तो बेटा लोगों को गोद लेता है। यह हमेशा पिता का काम है।

अगर मैं यूहन्ना 15 को सही से समझूँ तो तुमने मुझे नहीं चुना; मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें फल लाने के लिए नियुक्त किया, और तुम्हारा फल बना रहेगा। तुम संसार के नहीं हो, और तुम मेरे हो क्योंकि मैंने तुम्हें चुना है। पुत्र चुनाव का लेखक है, और यह केवल पूरी बाइबल में है।

यह हमेशा पिता ही है। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यूहन्ना 2 में, इस मंदिर को नष्ट कर दो और तीन दिनों में मैं इसे फिर से खड़ा कर दूँगा। वह अपने शरीर के मंदिर के बारे में बात कर रहा था।

यीशु अपने पुनरुत्थान की भविष्यवाणी कर रहे हैं। और उनके जी उठने के बाद, शिष्यों ने न केवल पुराने नियम पर बल्कि यीशु के शब्दों पर भी पुराने नियम के बराबर विश्वास किया। और यहाँ यूहन्ना 10 में, मैं अपना जीवन देता हूँ, मैं इसे फिर से लेता हूँ, और अंदाज़ा लगाइए क्या? यह पिता से अलग उनका अपना विचार नहीं था।

मेरा प्राण कोई मुझसे नहीं छीन सकता, मैं अपनी इच्छा से उसे त्यागता हूँ। 18.

मुझे इसे छोड़ने का अधिकार है। और मुझे इसे फिर से लेने का अधिकार है। यह जिम्मेदारी मुझे मेरे पिता से मिली है।

बेटा परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है। और मैं यह कहना बंद कर दूँगा। शायद यह आखिरी बार होगा।

मैं इसकी गारंटी नहीं दूँगा। यह उलटा नहीं हो सकता। पिता आज्ञा नहीं मानते।

पिता के साथ उनके मानवीय रिश्ते में दिखता है। हाँ, उनका एक दिव्य रिश्ता भी है।

यूहन्ना 1, 18. वह पुत्र है जो पिता की गोद में है। पिता के हृदय में है।

फिर भी जब वह पृथ्वी पर है, तो वह पुत्र है जो पिता की आज्ञा का पालन करता है। यूहन्ना 12:49.

मैंने अपनी मर्जी से नहीं कहा है। कभी-कभी वह कहता है कि वह ऐसा करता है, कभी-कभी वह ऐसा नहीं करता। इसका अर्थ पिता की इच्छा के विपरीत है।

परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है, उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या बोलूँ और क्या बोलूँ। यूहन्ना 14:31.

शैतान आ रहा है। मैं मरने जा रहा हूँ, यीशु कहते हैं। इस दुनिया का शासक आ रहा है।

उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं है। जिस तरह से पतन के बाद से हर इंसान पर उसका अधिकार है। उनकी आंतरिक पापी इच्छाओं के साथ।

और प्रकृति, अगर आप इसे ऐसा कहना चाहें। उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं है। लेकिन मैं वैसा ही करता हूँ जैसा पिता ने मुझे आदेश दिया है।

यीशु क्रूस पर चढ़ने जा रहा है। तो, यह एक कारण है कि दुनिया जान सके कि मैं पिता से प्रेम करता हूँ।

उठो, चलो यहाँ से चलते हैं। और अंत में, यूहन्ना 15:10. शाखाओं में।

यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो बने रहोगे। तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसे कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है।

और मैं उसके प्रेम में रहता हूँ। इस बारे में कोई गलती मत करो। ईश्वरत्व का शाश्वत, सर्वशक्तिमान दूसरा व्यक्ति।

नासरत के यीशु में एक मांस और रक्त मानव बन गया। और यह अन्य तरीकों से भी दिखाया गया है।

इस तथ्य में कि उसका अपने पिता के साथ एक मानवीय रिश्ता था। हमारे अगले व्याख्यान में, प्रभु की इच्छा से। हम मुश्किल मामले को उठाएंगे। इब्रानियों की पुस्तक के अनुसार, यीशु को सिद्ध बनाया गया।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह सत्र 17 है, सिस्टेमेटिक्स, क्राइस्ट प्रूप्स की मानवता।